वर्ष 11, अंक 39,अक्तुबर-दिसंबर 2021

मूल्य
₹ 150/-

UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

नागफनी

अस्मिता,चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

अतिथि संपादक- प्रो. आर. जयचंद्रन

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

संपादक
सपना सोनकर

सह-संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. एन. पी. प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408
वर्ष 11, अंक 39,अक्तुबर-दिसंबर 2021

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह, रीवा (मध्यप्रदेश)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
डॉ. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. उमाकांत हजारिका, शिवसागर, असम

मुख पृष्ठ- सुरेश मौर्या, ग्राफिक डिजाइनर, बैढ़न-सिंगरौली (म.प्र.)

प्रकाशन/मद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467

सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC83671001382 82 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतय: अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। **नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्ड बैंक/चेक/ बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

लेख भेजने के लिए Mail ID: nagfani81@gmail.com **Website: http:naagfani.com**

नागफनी

अनुक्रम

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय..... 01

आजादी का अमृत महोत्सव

1. आजादी का अमृत महोत्सव और श्रमिक उद्घाटक : डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर - डॉ.नितीन कुंभार 02-03
2. आजादी के आंदोलन में हिन्दी का योगदान - मार्सेल लूविस मस्करेन्हस 04-05
3. कोयम्बतूर के स्वतंत्रता सेनानी-डॉ.जी शांति 06-07
4. भारत की आजादी और हिन्दी साहित्य : डॉ.बालेन्द्र सिंह यादव 08-13
5. राष्ट्रोत्थान में साहित्य का योगदान-डॉ. आर नागेश 14-15
6. स्वतंत्रता संग्राम और निराला की कविता -डॉ.जस्टी एम्मानुवल 16-17
7. हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्वतंत्रता आंदोलन और आदिवासी -डॉ.संजय नाईनवाड 18-21
8. बंगाल नवजागरण का भारत के विभिन्न प्रांतों पर प्रभाव- डॉ.अपराजिता जॉय नंदी 22-25
9. स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता का योगदान-डॉ. रेखा अग्रवाल 26-27
10. राम की शक्तिपूजा-स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के संदर्भ में -डॉ. विजय गाडे 28-30
11. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में छायावादी कवियों का योगदान - डॉ.वीरिश कुमार 31-32
12. 1857 की क्रान्ति : हाशिए के समाज की स्त्रियों की भूमिका -नित्यानन्द सागर 33-35
13. काका कालेलकर जी की वैचारिक दृष्टि -डॉ.बाबासाहेब माने 36-38
14. 'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' नाटक में अभिव्यक्त हिंदू-मुस्लिम एकता- दीपक वरक/ प्रो.वृषाली मांद्रेकर 39-41
15. महिला रचनाकारों के बाल एकांकियों में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता-डॉ.शितल गायकवाड 42-43
16. भारतीय साहित्य में संस्कृति एवं लोकजीवन की अभिव्यक्ति-डॉ.नवनाथ गाडेकर 44-45
17. 'गौरी' कहानी में देशभक्ति- डॉ.वसंत माळी 46-47
18. दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना का स्वर - डॉ.अन्सा ए. 48-50
19. भारत विभाजन की त्रासदी एवं दलित विमर्श-सुकांत सुमन 51-54
20. आजादी पूर्व भारतीय नारी की दशा और दिशा-डॉ. जयश्री ओ 55-56
21. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षणिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता-प्रो.मनीषा वर्मा 57-59
22. आधुनिक भारत के निर्माता : डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर-डॉ.मनोहर भंडारे 60-62
23. महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगकिता-डॉ.जीतेन्द्र कुमार डेहरिया 63-64
24. राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गाँधीजी का योगदान -डॉ.धर्मराज पवार 65-68
25. ऐतिहासिक विचार और स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री-मोनी 69-70

कविता

1. कविताएँ- सार्जेंट अभिमन्य पाण्डेय 'मन्नू' 71-72
2. मुझे कुछ करके जाना है- समीर उपाध्याय 73
3. कविताएँ - लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव 73-77

'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ'नाटक में अभिव्यक्त हिंदू-मुस्लिम एकता

-श्री दीपक वरक
शोधार्थी,
गोवा विश्वविद्यालय,
ताळगाँव, गोवा

-प्रो.वृषाली मांद्रेकर
विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक,
गोवा विश्वविद्यालय,
गोवा

सार :प्रस्तुत आलेख हिंदी के सुप्रसिद्ध नाटककार असग़र वजाहत का चर्चित नाटक 'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' पर केंद्रित है। भारत विभाजन पर आधारित इस नाटक में नाटककार ने हिंदू-मुस्लिम एकता के साथ-साथ दो संस्कृतियों के धार्मिक एवं सामाजिक सौहार्द को दिखाया है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने मानवता का संदेश दिया है। मानवीय संबंध देश, धर्म, जाति, संप्रदाय आदि से बड़े होते हैं और मनुष्य चाहे किसी देश या धर्म का हो वह शांति से रहना चाहता है। नाटक धार्मिक सहिष्णुता पर बल देता है।

बीज शब्द- जम्याइ, राष्ट्रीय, सामाजिक सौहार्द, धार्मिक सौहार्द, धर्मनिरपेक्ष, संवेदनशील, शरणार्थी, बेसहारा, कस्टोडियन, मानव कल्याण, कुटुंबकम, विभाजन, त्रासदी, दाह-संस्कार, मानवीय संवेदना।

प्रस्तावना :-भारतीय एकता, संस्कार, संस्कृति एवं सभ्यता हमारी धरोहर है। एक समय था जब भारत एक ऐसा देश था जहाँ विभिन्न धर्म, क्षेत्र, संस्कृति, परंपरा, नस्ल, जाति, रंग और पंथ के लोग एक-साथ रहते थे लेकिन औपनिवेशक महाशक्ति ने बड़े आसानी से एक वतन के दो टुकड़े कर दो मुल्कों में बाँट दिया। भारत-पाकिस्तान एक ऐसी ही मानव निर्मित त्रासदी है। जिसने इतिहास के सबसे बड़े मानवविस्थापनों को जन्म दिया। साहित्य के माध्यम से अनेक लेखकों ने भारतीय जनमानस में तत्कालीन सत्ता से विरोध में आवाज़ उठाकर देश को अँग्रेज़ों के चंगुलों से निकाला और देश को आज़ाद किया।राष्ट्र के प्रति गहन तथा तीव्र अपनत्व और ममत्व की भावना से राष्ट्रीयता का जन्म हुआ है। राष्ट्रीयता एक सतत् गतिशील धारा और अंतर्मन की भावना है। राष्ट्रीयता शब्द बहुत व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होता है। साहित्य में राष्ट्रीयता से तात्पर्य स्वदेश एवं विदेश में लिखी गई रचनाओं से है,जिसकी प्रेरणा इस देश की भूमि और परिवेश से ली गई हो तथा जिसमें समस्त राष्ट्र के एकीकरण और उन्नयन की संभावनाएँ निहित हो।असग़र वजाहत के नाटक राष्ट्रीय एकता का विवेचन करने वाले हैं। उनके नाटकों में धर्म,संप्रदाय, राजनीति, पत्रकारिता आदि का विवेचन राष्ट्र के संदर्भ में हुआ है। असग़र वजाहत एक प्रतिबद्ध नाटककार है जो राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्त्वों को बेबाकी से सामने रखते हैं। वर्तमान समय की मुख्य विसंगति संप्रदायवाद के साथ-साथ राष्ट्रीयता को भी अपने नाटक 'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ'में विवेचित करते हैं।यह नाटक भारत-पाकिस्तान के विभाजन के परिवेश से उत्पन्न सांप्रदायिक त्रासदी का यथार्थ रूप चित्रित करता है।

असग़र वजाहत का नाटक 'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ'में जहाँ तक एक तरफ़ जातीयता दिखाई पड़ती है वहीं दूसरी तरफ़ धर्मनिरपेक्षता के दर्शन भी होते हैं। किसी भी देश में एक अकेली जातिया कौम का निवास नहीं है,अनेक जातियाँ विद्यमान है। ऐसे में असग़र वजाहत का यह नाटक जाति और धर्म की विशुद्धता का मौलिक चिंतन प्रस्तुत करता है। देश के बँटवारे पर आधारित इस नाटक में राष्ट्रीय जीवन की अभिव्यक्ति व्यापक स्तर पर हुई है।15 अगस्त 1947 को देश अँग्रेज़ोंकी ग़ुलामी से आज़ाद हुआ तो भारत-पाकिस्तान का निर्माण हुआ। इसमें लाखों लोगों का जीवन एक दर्दनाक घटना से ग़ुजरा। इतिहास में पहली बार लाखों लोग एक-दूसरे के ख़ुन के प्यासे हो गए,कई लोग शरणार्थी हो गए,कुछ लोगों ने अपने परिवार-वालों को खो दिया। इस दौरान जहाँअनेक लोगों ने अपने स्वार्थों को तिलांजलि देकर राष्ट्रहित और मानव जीवन के लिए काम किया, तो वही अन्यों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए राष्ट्र और मानवजीवन को ताक पर रख दिया।उन्होंने भारत-पाकिस्तान में धर्म की कट्टरता या सांप्रदायिकता का बीज बोने में अहम भूमिका निभाई। राजनीतिक कुचक्रोंका धर्म शिकार हुआ। हिंदू-मुस्लिम धर्म के लोगों ने उस वक्त राष्ट्रहित का विश्लेषण करते हुए केवल धर्म का ही चिंतन किया। यह चिंतन नहीं केवल एक कट्टरवाद था जिसका परिणाम आज भी भारत भुगत रहा है। देश विभाजन के उपरांत जो दंगे-फ़साद हुए उसमें असंख्य लोगों का जीवन नष्ट हो गया। धर्म के अंधे लोगों ने अपने लोगों को मौत के घाट उतार दिया। असग़र वजाहत ने राष्ट्र को केंद्र में रखकर देश-विभाजन के बाद उत्पन्न शरणार्थी समस्या और धर्म की विवेचना इस नाटक मेंकी है।

असग़र वजाहत का उपर्युक्त नाटक सोलह दृश्यों में विभाजित है। नाटक में मुख्य धारा विस्थापन के दौरान शरणार्थी परिवार की व्यथा को उजागर करते हुए उसके मानवीय स्वरूप को अंकित किया गया है। इसकी कथावस्तु भारत-पाकिस्तान के दौरान लाहौर के एक मुहल्ले का विश्लेषण करती है।सिकंदरमिर्ज़ा लखनऊ छोड़कर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भागता हुआ लाहौर आ जाता है। वह अपना घर, परिवार, धन-दौलत, व्यापार सब कुछ लखनऊ छोड़ आता है। इस भागम भाग में हज़ारों लोग बेसहारा हुए जो कई महीनों तक बिना किसी सहयोग के शरणार्थी कैंपों में पड़े रहे। सिकंदरमिर्ज़ा को कस्टोडियन वालों ने लाहौर में रतन जौहरी की हवेली एलॉट कर दी। हवेली में रतन जौहरी की बूढ़ी माँ छिपकर रहती थी।वह पाकिस्तान को ही अपना वतन मानती थी तथा लाहौर छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहती थी। वह लाहौर की धरती से बड़ा प्यार करती है। उसको यह विश्वास होता है कि एक दिन उसका बेटा रतन अवश्य ही लौट आएगा। वह इस बात को मानने से इनकार कर देती है कि उसका बेटा विभाजन के दौरान मारा गया है। वह अपनी हवेली को और लाहौर को किसी भी क़ीमत पर नहीं छोड़ना चाहती है। सिकंदरमिर्ज़ा इस बुढ़िया को समझाता है कि अब भारत पाकिस्तान बन चुका है और वह अपने देश भारत चली जाए। पर वह मना करती है। धीरे-धीरे रतन जौहरी की माँ धर्म परायण स्नेहमयी रूप धारण करती है और निस्वार्थ भाव से मिर्ज़ा और उसके परिवार की सेवा करती है। वह लाहौरके इस मुहल्ले के सभी मुसलमानों का सुख-दुख बाँटती है। वह धर्म और जातीयता को भूलकर सबकी सेवा करती है। वह मुसलमानों की माई बन जाती है। रतन जौहरी की माँ भेदभाव भुलाकर बड़े विश्वास के साथ मुसलमान परिवार के साथ दीवाली मनाती है। यहाँ हमे मुस्लिम धर्म और हिंदू-धर्म की एकता दृष्टिगोचर होती है। इस दीवाली के अवसर पर कई असामाजिक तत्त्व धर्म के नाम पर ठेकेदारी करते भी दिखाई देते हैं।येवे लोग हैं जो चाहते हैं कि माई पाकिस्तान से चली जाए। यहाँ आदमी का स्वार्थ झलकता है। धर्मनिरपेक्षता की जगह धर्म की कट्टरता के दर्शन होते हैं। ये धर्म के ठेकेदार एक ग़ैरबिरादरी या ग़ैर धर्म की नारी को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं।ये लोग माई की हिफ़ाज़त करने वाले सिकंदरमिर्ज़ा को भी धमकी देते हैं।ये वे लोग हैं जो धर्म के नाम पर रतन की माँ को हवेली से निकालकर ख़ुद कब्ज़ा करना चाहते हैं। मौलवी साहब को भी ये धर्म के ठेकेदार एक नारी के प्रति भड़काते हैं लेकिन सफल नहीं हो पाते।

पहले तो माई किसी भी क़ीमत पर अपनी हवेली छोड़कर लाहौर से जाने के लिए तैयार नहीं होती परंतु जब वह यह देखती है कि उसके कारण मिर्ज़ा के परिवार पर कोई बड़ी आपत्ति आ सकती है तो वह ख़ुद खुद-ब-ख़ुदहवेली छोड़कर भारत जाना चाहती है। वह आने वाली मुसीबत की आशंका से घबरा जाती है।मिर्ज़ा और उसके परिवार वालों के अलावा माई को चाहने वाले उसे लाहौर से जाने नहीं देते। माई लाहौर छोड़कर भारत तो नहीं आती परंतु मृत्यु को अंगीकार कर लेती है।माई की मृत्यु होने पर मिर्ज़ा,मौहल्ले के सच्चे धार्मिक मौलवी इकरामुद्दीन और अन्य मुसलमान भाई मिलकर हिंदू-धर्म के अनुसार माई का दाह-संस्कार करते हैं। धर्म के ठेकेदारों को यह बात नहीं सुहाती है। नाटक के अंत में धर्म और राष्ट्र की एकता का प्रतिपादन करनेवाले ईमानदार मौलवी साहब को पहलवान और उसके गुंडे मार डालते हैं। असग़र वजाहत का यह नाटक देश विभाजन की त्रासदी के साथ-साथ धर्म की एकता का प्रतिपादन तो करता ही है साथ ही राष्ट्रीय जीवन का भी विवेचन करता है। यह नाटक हिंदू-मुस्लिम एकता को संबल देने वाला, राष्ट्रहित की बात करने वाला और मानवीय संवेदना को जगाता है। नाटककार ने बड़ी कुशलता से सांप्रदायिक एकता,

धार्मिक संबंध,सांस्कृतिक प्रगाढ़ता और राष्ट्रीय हितों का विश्लेषण मानवीय संदर्भ में किया है।इस ओर डॉ.निम्मी का कहना है "घोर सांप्रदायिकता के उक्त दहशत भरे वातावरण में भी हिंदू औरत की हिफ़ाज़त करने वाले मुसलमानों तथा मरणोपरांत उसके दाह-संस्कार में शरीक होने को तत्पर सच्चे धार्मिक मौलवी और कतिपय मुसलमानों का चित्र खींचते वक़्त नाटककार का मकसद यक़ीन नही इनसानी रिश्ते के जज़्बाती ताने-बाने में प्रस्तुत मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। अंत:हिंदू-मुस्लिम एकता और भाईचारे को बल प्रदान करता है।"[1]नाटक के माध्यम से नाटककार ने धार्मिक एकता और सांप्रदायिक जीवन को व्यापक करने का संदेश दिया है। आज के समय में यही राष्ट्रवादी जीवन है कि हम धर्म, जाति, नस्ल को भुलाकर राष्ट्रहित और मानव कल्याण की बात करें।आज हमारे देश में अलग-अलग धर्म एवं संप्रदाय के लोग निवास करते हैं ऐसे में सामाजिक सौहार्द की भावना महत्त्वपूर्ण है। पहलवान तथा उसके दोस्त रतन जौहरी की माँ का इसलिए विरोध करते हैं क्योंकि वह हिंदू है। देश विभाजन के बाद लाहौर में रहना उसका कोई अधिकार नहीं है। उसको अपने त्योहार दीवाली को लेकर पहलवान जैसे लोग आपत्ति जताते हैं। पहलवान की इस नफ़रत की भावना को और असहिष्णुता का विरोध करते हुए मौलाना उन्हें समझाते हैं। मौलाना की सारी बातें सामाजिक सौहार्द की अभिव्यक्ति ही है-

"**पहलवान:**असी अपने मुसलमान भाइयांदा क़त्लेआम देख्या है।सडे दिलां चबदले की आग भड़क रही है।

मौलवी : पुत्तरज़ुल्मको ज़ुल्म से ख़त्म नहीं कर सकदे...नेकी,शराफ़त इमानदारी से ज़ुल्मख़त्म होंदा है....जानवर तक प्यार नाल पालतू बन जांदा है...तुसी इंसान ते ज़ुलम करके खुदा नू की मुंह मुँह दिखाओगे? इस्लाम जुल्म दे ख़िलाफ़ है...जो जुल्म करदे ने ओ मुसलमान नहीं है...समझे ... इरशाद है कि तुम ज़मीन वालों पर रहम करो,आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।"[2]रतन जौहरी की माँ,मिर्ज़ा की इजाज़त से दीवाली मनाती है,पूजा करती है,दीपक जलाती है। जावेद तथा तन्नो उसकी मदद करते हैं।माई सबको मिठाइयाँ बाँटती है, दुआ देती है। यहाँ मिर्ज़ासिकंदर और उसका परिवार मिलकर माई के साथ दीवाली मनाते हैं। इस दीवाली के अवसर पर तन्नो अपनी माँ से बड़े ही मार्मिक सवाल करती है। यह सवाल राष्ट्रीय जीवन की अभिव्यक्ति के दर्शन करवाते हैं।यहाँ नाटककार असग़र वजाहतने प्रासंगिकता को उकेरा है-

"तन्नो : अम्माँ ये सब हुआ क्यों?

हमीदा बेगम : क्या बेटी?

तन्नो : यही हिंदोस्तान, पाकिस्तान?

हमीदा बेगम : बेटी, मुझे क्या मालूम.....

तन्नो : तो हम लोग पाकिस्तान क्यों आ गए।

हमीदा बेगम : मैं क्या जानूं बेटी?

तन्नो : अम्माँ,अगर हम लोग और माई एक ही घर में रह सकते हैं

तो हिन्दुस्थान में हिन्दु और मुसलमान क्यों नहीं रह सकते थे।[3]

इस दीवाली के दिन मिर्ज़ासिकंदर के घर माई से मुलाक़ात करने हमीद और नासिर आते हैं। माई दोनों को मिठाई खिलाती है, दुआ देती है और कहती है कि पाकिस्तान बनने के कारण उसने इस बार दीवाली बड़ी धूमधाम से नहीं मनाई है। यहाँ नासिर जो माई को जवाब देता है वह एक लेखक की राष्ट्रीय सोच को दर्शाती है। लेखक सांप्रदायिक सौहार्द के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन की अभिव्यक्ति प्रदान करता है-

"नासिर : चाहे कितने ही'आस्तां' बन जाएं... वहां रहेंगे तो हमारे तुम्हारे जैसे इंसान ही न?... और माईजहाँ इंसान होंगे वहाँ रिश्ते होंगे...जज़्बात होंगे... सरसों के खेतों की तलाश में सरदर्गा दीवाने होंगे... क्यों हमीद भाई?।"[4]

माई के दीवाली मनाने को पहलवान ग़ैर इस्लामी काम मानता है। वह इसे मुसलमान के लिए अच्छा नहीं मानता है। वह मिर्ज़ा से इस बात की शिकायत करता है कि उसने माई को अपने घर में चिराग जलाने, पूजा-पाठ करने तथा दीवाली मनाने की इजाज़त क्यों दी। इस बात पर नासिर पहलवान को समझाता है। नासिर यहाँसांप्रदायिकसोहार्द की प्रेरणा देता है। नासिर कहता है-

"नासिर : भई आप माई के दीवाली मनाने को ग़ैर इस्लामी हुकूमत जो कह रहे हैं,वो अपने हिसाब से कहरहे हैं।वोहिंदूहै उन्हें पूरा हक़ है अपने मज़हब पर चलने का।"[5]

मौलाना इस नाटक में एक सांप्रदायिक सौहार्द की बात करने वाला व्यक्ति है। वह पहलवान को इबादत की आज़ादी की बात समझाता है। मौलाना राष्ट्रहित में होने वाले मज़हब की बात करता है। वह दूसरे मज़हब का भी सम्मान करने की सीख देता है-

"मौलाना : भई हदीस शरीफ़ है कि तुम दूसरों के ख़ुदा को बुरा न कहो, ताकि वह तुम्हारेख़ुदा को बुरा न कहें, तुम दूसरों के मज़हब को बुरा न कहो, ताकि वह तुम्हारे मज़हब को बुरा न कहें।"[6]

माई का जीवन राष्ट्रीय कल्याण के लिए समर्पित हो जाता है।मिर्ज़ा के परिवार को माई अपना लेती है।यहाँ माई के माध्यम से नाटककार ने राष्ट्रीय जीवन के अभिव्यक्ति दिखाईहै। वह मिर्ज़ा को अपना बेटा मानती है, बेगम को बहु,जावेद को पोता और तन्नो को पोती मानने लगती है।सिकंदर मिर्ज़ा का परिवार माई को परिवार की एक बुज़ुर्ग सदस्य केरूप में मानकर उनकी इज्ज़त करने लगता है।सारा मुहल्ला माई को बड़ा सम्मान देता है।यहाँमिर्ज़ा की भावना राष्ट्रीयसहिष्णुता को विस्तार देती है। पहलवान के द्वारा मिर्ज़ा को धमकाने के बाद भी मिर्ज़ा माई को घर से नहीं निकालता।माई को जब यह अंदाज़ा हो जाता है कि लोग मेरे कारण मिर्ज़ा को परेशान कर रहे हैं तो वह दिल्ली जाने को कहती हैं। परंतु नासिर उसको रोक लेता है।मिर्ज़ा को जब यह बात पता चलती है तो मानवीय भावना की अभिव्यक्ति बड़े ही मार्मिक शब्दों में करता है-

"सिकंदरमिर्ज़ा : अपना फ़र्ज़ है कि आप अपने बेटे, पोते, पोती के साथ रहें.... बस।

सिकंदरमिर्ज़ा : क़समख़ुदा की आप चली जातीं तो हम पर क्या बीतती पता है आपको... हम शर्म से ज़मीनमें गड़ जाते... हम किसी से आँखें मिलाने लायक़न रह जाते...अरे हद है....अब आप कहीं नहीं जाएगी।"[7]नाटककार ने एक हिंदूऔर एक मुसलमान परिवार का विश्लेषण जहाँ धार्मिक सौहार्द और सांप्रदायिकता के रूप में प्रदर्शित किया है वहीं वह राष्ट्रीय हितों की रक्षा करता हुआ भी दिखाया गया है।भारतीय संस्कृति में धार्मिक सौहार्द एवं धर्मनिरपेक्ष जीवन को महत्त्व दिया जाता है। अपने राष्ट्र के प्रति संवेदनशील होने के कारण किसी दूसरे धर्म के व्यक्ति का अंतिम संस्कार भी उसी धर्म के रिवाजों के अनुसार करना अपना परम कर्तव्य माना जाता है। माई की जब मृत्यु हो जाती है तो सारे मुहल्ले के लोग मिलकर हिंदू रीति-रिवाज से अंतिम संस्कार करने के लिए सामग्री एकत्र करते हैं। लाहौर मेंहिंदूस्मशान घाट नहीं बचने के कारण रावी नदी के तट पर अग्नि संस्कारकरते हैं। माई को "राम नाम सत है यही तुम्हारी गत है" कहकर कंधा भी दिया जाता है।मिर्ज़ा माई को अग्नि देता है।यहाँहिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतिपादन किया है।इस समय मौलाना धार्मिक सहिष्णुता का विवेचन इस प्रकार करतेहैं-

"मौलाना : आज वो औरत मर चुकी है जिसके तुम सब एक एहसानात है, तुम सबको उसने अपना बच्चा समझा था,आज जबकि वो मौत के आग़ोशमें सो चुकी है,तुम उसे अपनी माँ मानने से इनकार कर दोगे...और अगर वो तुम्हारी माँ है तो उसका जो मज़हब था उसका ऐहतेराम करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।

सिकंदरमिर्ज़ा : आप बजा फ़रमाते हैंमौलाना... हमें मरहूमा के मज़हबी उसूलों के मुताबिक़ ही उनका कफ़न दफ़न करना चाहिए।"[8]

असग़र वजाहत ने राष्ट्रीय जीवन का विवेचन धर्म को मानव कल्याण को केन्द्र में रखकर किया है।असग़र वजाहत जी मानवीय संवेदना और व्यंग्य के लेखक कहे जाते हैं।वे विश्व कुटुंबकम की भावना से लेखन करने वाले साहित्यकार है। अपने नाटकों के माध्यम से असग़र जी ने मानवीयता को जाग्रत करने का काम किया है। नाटक के शुरू में सिकंदर का परिवार रतन जौहरी की माँ को हवेली से बाहर निकालने की फ़िराक़ में रहता है, वह माई को ख़त्म भी करना चाहता है। परंतु हमीदा बेगम का मानवीय मन जागता है। वह मिर्ज़ा को अमानवीय कर्म करने से रोक देती है, हमीदा बेगम और सिकंदर मिर्ज़ा के संवादों से यह भाव परिलक्षित होता है-

"हमीदा बेगम : नहीं...नहीं आपको मेरी क़सम...ये न कीजिए। उसने हमारा बिगड़ा ही क्या है।

सिकंदरमिर्ज़ा : बेगम, एककांटा है जो निकल गया तो जिन्दगी भर के लिए आराम ही आराम है।

हमीदा बेगम : हाय मेरे अल्लाह, इतना बड़ा गुनाह... जब हम किसी को जिन्दगी दे नहीं सकते तो हमें छीनने का क्या हक़ है?।"[९]

मिर्ज़ा एक मानव जीवन की विशालता को प्रकट करने वाला पात्र है। यहाँ नाटककार इस बात की तरफ़भी संकेत करता है कि वही राष्ट्रप्रगति कर सकता है जिसमें लोग एक-दूसरे के कल्याण की बात करते हो। जो धर्म, जाति,संप्रदाय से ऊपर उठकर मानव कल्याण हेतु अग्रसर होते हैं।सिकंदर का परिवार माई को बड़ी इज्ज़त से अपने घर में रखता है।यहाँहिंदू-मुसलमान का कोई झगड़ा नहीं है। नाटककार ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि जब आदमी का मानवीय विवेक जाग्रतहोता है तो वह जीवन प्रदान करने वाला महामानव बन जाता है। पहलवान जब माई को हवेली से निकालने की बात पर अड़ जाता है तो मौलाना उसे मानवीय सौहार्द और धर्मनिरपेक्ष की की बातें समझता है-

"मौलवी : वान्ने अहज़मनउल मुशरीकन अस्त आदक फार्जिदा...हुक्मे ख़ुदाबंदी है कि अगर मुश्किल मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मांगे तो उसको पनाह दो।"[१०]

"मौलवी : लड़ना ही है तो अपने नफ़्स से लड़ो... वही सबसे बड़ा जिहाद सी.... ख़ुदगर्ज़ी,लालच, आरामो-असाइश से लड़ो.... बेसहारा से बूढ़ी औरत नाल लड़ना इस्लाम नहीं है।"[११]

"मौलाना : बेवा का दर्जा तो हमारे मज़हब में बहुत बुलंद है... हदीस है कि बेवा और गरीबके लिए दौड़-धूप करने वाला दिन भर रोज़ा और रात भर नमाज़ पढ़नेवाले के बराबर है।"[१२]

रतन जौहरी की माँअब मुहल्ले की माई बनकर सबकी सेवा करती है। वह मानव सेवा को अपना लेती है। सबमें केवल अपनी बहु-बेटे, पोते-पोतियों का दर्शन करती है। मानव सेवा और सहृदय के कारण सबकी चहेती बन जाती है।ऐसे में जब कोई उसे प्यार से बुलाता है तो वहगद् गदहो जाती है।तन्नो जब माई को दादी कहती है तो वह भावुक हो जाती है। उसे अपनी पोती राधा की याद आ जाती है। यहाँ मानवीय धर्म की व्याख्या राष्ट्रीय जीवन के संदर्भ में की गई है। रतन की माँ मानवीय धर्म का प्रतिपादन इस प्रकार करती है-

"तन्नो : दादी... दादी माँ... सुनिए ...दादी माँ....(ऊपर से आवाज़)

रतन की माँ : आई बेटी आई....तू जुग जुग जीवें (आते हुए) मैं जादवी तेरी आवाज सुनदी आं...मनूंलगदाहय कि मैं जिन्दा हां...।"[१३]

यहाँ रतन की माँ को एक राष्ट्रव्यापी, लोक कल्याणकारी नारी के रूप में चित्रित किया गया है। रतन की माँहमीदा बेगम को कहती है कि जब तक शरीर में प्राण है, तब तक वह दूसरों की सेवा करती रहेगी। अब इस दुनिया में सेवा भाव के अलावा बचा ही क्या है? निश्चित रूप से असग़र वजाहत ने रतन की माँ के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन की अभिव्यक्ति की है।वह एक ऐसी नारी है जो यह नहीं देखती कि हिंदू की सेवा कर रही हूँ या मुसलमान की, मैं लाहौर में हूँ या लखनऊ में, मैं भारत में हूँ या पाकिस्तान में,वह जहाँ रह रही है, बस उसी को अपना राष्ट्र समझती हैं। वहीं के लोगों को अपने घर के बच्चे मानती है-

"हमीदा बेगम : (हँसकर) माई के साथ ही मैं घर से निकलती हूँ लेकिन माई जैसा ख़िदमत का जज़्बाकहाँ से लाऊं... यह तो सुबह से निकलती है तो शाम को ही लौटती है।

रतन की माँ : बेटी जद तक इस शरीर विच ताक़त है तब तक ही सब कुछ है, नहीं तो एक दिन त्वाडे लोकां दे बोझ बणना ही है।"[१४]

हमीदा बेगमसिकंदर मिर्ज़ा को माई की सेवा का विश्लेषण इन शब्दों में करती है-

"हमीदा बेगम : माई घर में रहती ही कहाँ है। तड़के रावी में नहाने चली जाती है। सुबह अलीक साहब के यहाँ बड़ियां डाल रह हैं, तो कभी नफ़ीसा को अस्पताल में ले जा रही हैं, तीसरे पहर बेगमआफ़ताब के लड़के की तीमारदारी कर रही हैं तो शाम को सकीना को अचार-डालना सिखा रही हैं..... रात में दस बजे लौटती हैं। हम लोगों सेमुलाक़ात हो तो कैसे हो...."[१५]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि असग़र वजाहत ने 'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ'नाटक में सिकंदरमिर्ज़ा, माई, मौलवी, नासिर और हमीदा बेगम ऐसे पात्र है जो सामाजिक सौहार्द, धार्मिक सौहार्द,के साथ-साथ राष्ट्रीय जीवन की अभिव्यक्ति को प्रकट करने वाले है। यह पात्र राष्ट्र हित की भावना के अंतर्गत धर्मनिरपेक्ष और सांप्रदायिक सौहार्द को प्रस्तुत करते हैं।लेखक यहाँ इस बात को स्पष्ट करते है कि व्यक्ति के केवल राष्ट्रहित में बलिदान देना या प्राण त्यागना ही राष्ट्रवादिता नहीं है बल्कि मानवीय जीवन को निस्वार्थ भावना से मानव कल्याण के लिए भी प्रस्तुत करना राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। इसके अलावा नाटककार ने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए उस नाटक में धार्मिक सहिष्णुता, मानव धर्म, भाईचारा, निस्वार्थ भावना आदि का विवेचन भी बड़ा सटीक और स्पष्ट रूप में किया है।असग़र वजाहत जी का यह नाटक मंचीय है तथा देश-विदेश में इसका कई बार सफल मंचन भी हुआ है। इसकी प्रासंगिकता युगानुकूल हमेशा बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1. असग़र वजाहतकी रचनाओं में सामाजिक सरोकार: डॉ.निम्मी.ए.ए,पृ.61, माया प्रकाशन, कानपुर, 2021

2. आठ नाटक,असग़र वजाहत-पृ.171, साहित्य उपक्रम, दिल्ली, जनवरी, 2016

3. वही,पृ.179

4. वही,पृ.180-181

5. वही,पृ.182

6. वही,पृ.184-185

7.वही,पृ.191

8.वही,पृ.197

9.वही,पृ.165

10.वही,पृ.171

11.वहीं,पृ.172

12.वही,पृ.185

13.वही,पृ.163

14.वही,पृ.178

15.वही,पृ.178

16.हर क़ैद से आज़ाद:सं.पल्लव, बनास जन, पृ.312-320,किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, 2017

****